International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 15-08-2020; Accepted: 30-08-2020; Published: 16-09-2020
www.educationjournal.in
Volume 5; Issue 5; 2020; Page No. 27-30

रवीन्द्रनाथ टैगोर के दर्शन में शांति शिक्षा के तत्वों का अध्ययन तथा वर्तमान शैक्षिक पाठ्यक्रम में उनकी उपादेयता

अमित कुमार [1], वी. के. शर्मा [2]
[1] शोधकर्ता, मदरहुड विश्वविद्यालय, रूड़की, उत्तराखंड, भारत
[2] शोध निर्देशक एवं अधिष्ठाता, शिक्षा संकाय, मदरहुड विश्वविद्यालय, रूड़की, उत्तराखंड, भारत

सारांश
मानव एक शांति प्रिय प्राणी है परन्तु मानव की इस शान्तिप्रियता को आज लालसा ने अशान्त बना दिया है। जिससे वह अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हिंसा पर उतर आया है। ऐसी हिंसा एक बच्चे से लेकर आयु लगभग पूरी कर चुके बुजुर्ग में घर कर गयी है। आज यह महसूस किया जा रहा है कि इस बढ़ती हिंसा को रोकने के लिए पाठ्यक्रम में शान्ति शिक्षा को शामिल करके दूर किया जा सकता है। जिसकी शुरूआत प्राथमिक स्तर से लेकर उच्चस्तर के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना प्रासंगिक है। जिसके लिए विभिन्न आयोगों ने शान्ति शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए सुझाव भी दिये हैं। प्रस्तावित शोध रवीन्द्रनाथ टैगोर के दर्शन में शांति शिक्षा के तत्व एवं वर्तमान शैक्षिक पाठ्यक्रम में उनकी उपादेयता का अध्ययन राष्ट्रीय जीवन को एक नई दिशा देने में राम बाण औषधि साबित हो सकती है, इनका जीवन और चिन्तन शैली राष्ट्रीयता से ओतप्रोत थी, जिनकी आधुनिक परिप्रेक्ष्य में आवश्यकता नितान्त आवश्यक जान पड़ती है, इनके माध्यम से राष्ट्रीय जीवन को कुछ नई दिशा मिल सकती है।

मुख्य शब्दः शांति शिक्षा, दर्शन, शैक्षिक पाठ्यक्रम

प्रस्तावना
आज की प्रतियोगितावादी और मशीनी दुनिया में हमारे सामने अनेक नई समस्याएं उठ खड़ी हुई है। इन्हीं में से एक प्रश्न हमारी शिक्षा से सम्बन्धित है, क्योंकि यही वह साधन है जो हमें लगातार असहिष्णुता की दुनिया में अच्छा मनुष्य बनाने में काम आता है। वर्तमान शिक्षा प्राप्त करने के के बाद बालक किस प्रकार का नागरिक बनेगा? हमारे सामने लगातार इसी प्रकार प्रश्न उठ खड़े होते हैं। आज यह आवश्यकता है कि बच्चे व वयस्क ऐसी शिक्षा प्राप्त करें जिसे वे आपस में एक दूसरे के नजदीक आयें, समाज से जुड़ें और मानव जाति एक होकर सम्पूर्णता के साथ जीवन यापन करे। जैसा कि सर्वविदित है कि किस प्रकार दुनिया ने दो विश्व युद्ध झेले हैं तथा उनका दर्दनाक दंश आज भी मानव मस्तिष्क पर छाया हुआ है। आज भी उस विनाशकारी घटना की दर्दनाक याद मानव के ऊपर अपना प्रभाव दिखा रही है। ऐसे समय में हमें शान्ति शिक्षा की आवश्यकता है। शिक्षा हमें विवेकशील तथा उचित–अनुचित में भेद कर सकने योग्य बनाती हैं। विद्या विहीन मनुष्य और पशु में कोई अन्तर नहीं है। जब से मानव सभ्यता का सूर्य उदय हुआ तभी से भारत अपने शिक्षा दर्शन के लिए प्रसिद्ध रहा है। यह सब भारतीय शिक्षा के उद्देश्यों का ही चमत्कार है जो कि भारतीय संस्कृति ने संसार का सदैव पथ–पर्दशन किया और आज भी जीवित है। शिक्षा जीवन भर चलने वाली तथा उतरोत्तर विकास में सहयोग प्रदान करने वाली प्रक्रिया है।

इतिहास गवाह है कि महापुरुषों के विचारों–क्रियाकलापों ने मानवता को समय–समय पर जीवन का अमर सन्देश दिया और मानवता की रक्षा की। आज का मानव और समाज एक चौराहे पर खड़ा हैं। विज्ञान और तकनीकी ज्ञान ने उसे शक्ति दी। उसका प्रयोग सिद्ध किया जाए,तो बहुत असाधारण लाभ पहुँच सकता है। बीमारी दूर हो सकती है, बेरोजगारी दूर हो सकती है, लोगों का जीवन–स्तर सुधर सकता है, लेकिन उस शक्ति का यदि दुरुपयोग किया जाए तो, ऐसा महाप्रलय होगा, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

रवीन्द्रनाथ टैगोर आधुनिक भारत के महान मनीषी, चिन्तक, दार्शनिक, शिक्षाविद् तथा समाज सुधारक हैं जिन्होनें भारतीय संस्कृति की पताका विश्व मे लहरायी।

शिक्षा एवं दर्शन का अर्थ
ज्ञानार्जन की क्रिया ''शिक्षा'' किसी न किसी रुप में प्राचीनकाल से मानव सभ्यता के साथ जुड़ी हुई हैं। शिक्षा को एक प्रकाशकीय पिंड के रुप में माना जाता है जिसका कार्य व्यक्ति के अंधकार (अज्ञान)में प्रकाश (ज्ञान) का संचार कर सांसारिक बन्धनों से मुक्त कर मोक्ष की प्राप्ति करा सकें। प्राचीन शिक्षा अर्न्तज्योति एवं शक्ति का स्रोत मानी जाती थी जो कि शारीरिक,मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक व आर्थिक शक्त्यिों का विकास कर मानव को श्रेष्ठ बनाती थी।

महर्षि अरविन्द के शब्दों में
बालक की शिक्षा उसमें जो कुछ सर्वोत्तम सर्वाधिक शक्तिशाली, सबसे अधिक आन्तरिक और सबसे अधिक जागरुक हैं। उसे बाहर लाना है, एक ऐसा निर्माण करना है जिसमें मानव की क्रिया एवं विकास चलने चाहिए तथा जो उसके आन्तरिक गुण और शक्ति के अनुकूल हों। उसे नई वस्तुएं अर्जित करनी चाहिए किन्तु वह उन्हे सर्वोतम रुप से, समग्ररुप से अपने विकसित प्रकार और जन्मजात शक्ति के आधार पर ही प्राप्त कर सकता है। ''

रवीन्द्रनाभ टैगोर ने कहा है कि – ''एक अध्यापक कभी भी वास्तविक अर्थो में नही पढा सकता, जब तक वह स्वयं भी सीख नही रहा है। ''एक दीपक दूसरे दीपक में तभी प्रज्ज्वलित कर सकता है, जब तक उसकी लौ जलती रहें।

दर्शन का अभिप्राय है यथार्थ सत्य की खोज करना। दर्शन अनुभव सामग्री के सन्दर्भ में व्यवस्थित चिन्तन के आधार पर उपलब्ध अन्तर्दृष्टि का परिणाम है जो कि सत् के चरम भाव के स्वरुप की पूर्णता (Totality) और संगति (Harmony) की खोज

करता है और तब अन्त में सत (Reality) तक पहुँचता है।

शान्ति शिक्षा दो शब्दों के मेल से बना शब्द है। शान्ति तथा शिक्षा। शान्ति एक मानसिक स्थिति है, जहां हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है।

शांति की स्थापना केवल मानसिक लालसाओ को नियन्त्रित करके, आवश्कयताओं व इच्छाओं के मध्य सन्तुलन, स्थापित करके सहनशीलता का विकास करके तथा दूसरों के विचारो, अभावों, व अन्तरों का सम्मान करके, समपर्ण, प्रेम व सहयोग से आपसी समझ तथा गहन विश्वास आदि से प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार शांति को तीन आधारों पर समझा जा सकता है –

1.आंतरिक शांति
2. सामाजिक शांति
3.प्रकृति व शांति

आंतरिक शांति – आंतरिक शांति से तात्पर्य आत्म सन्तुष्टि से है। वह व्यक्ति जिसका मन व मस्तिष्क दुखों के बीच भी स्थिर रहे, जिसकी सभी इच्छाओं व कामनाये समाप्त हो चुकी हो, जो की क्रोध व भय से मुक्त हो चुका हो उसे आंतरिक शांति प्राप्त हो जाती है या वो आंतरिक शांति को प्राप्त कर लेता है।

सामाजिक शांति – सामाजिक शांति सें तात्पर्य है, वह स्थिती, जहाँ सब एक दूसरे के साथ मिल कर रहते है। सर्वविदित है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा व अकेला या समाज से अलग–अलग हो कर नहीं रह सकता है। वर्तमान में समाज के चित्र में काफी तेजी से परिवर्तन आया है। सजातीय, भाषायी व सांस्कृतिक विभिन्नता ने समाज को कई वर्गो मे बांट दिया है।

परन्तु सामाजिक शांति हेतु एक विश्ववादी समाज की आवश्यकता है जहां भाषायी, धार्मिक व सांस्कृतिक विभिन्नता के बीच एकता पाई जाती है। एक अर्थपूर्ण जीवन हेतु यह अत्यन्त आवश्यक है कि विभिन्नता में भी एकता पाई जाये।

सामाजिक शांति हेतु सहनशीलता ही काफी नहीं है इसके लिये प्यार और आदर प्राथमिक आवश्यकतायें है। सामाजिक शांति मानव के सौहार्दपूर्ण रिश्तो, आपसी सुलह, भाईचारे, नैतिकता, लोकतन्त्रतात्मकता, मानवाधिकार तथा आपसी मतभेदो व विचारो के सम्मान द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

प्रकृति के साथ शांति :– ग्रह पृथ्वी मानव सभ्यता का पालना है इसलिये उसे धरती मां के नाम से सम्बोधित किया जाता है। प्रकृति के साथ शांति से तात्पर्य है कि हमे धरती या प्रकृति की गरिमा को ध्यान मे रखते हुये हमें पर्यावरणीय व पारिस्थितिक पतन को रोकना होगा। ये सभी स्रोत शांति स्थापना के लिये आवश्यक है तथा इसके द्वारा शांति को प्राप्त किया जा सकता है। शांति एक जटिल परिकल्पना है आंशिक नहीं, सम्पूर्ण शांति तभी प्राप्त की जा सकती है। जब सभी साधन मिलकर कार्य करें।

पूर्व में किये गये शोध अध्ययन

रोबिन्स नज्जुमा (2011) ने "पीस एजुकेशन इन द कन्टेन्ट ऑफ पास्ट कॉनफ्लिक्ट फॉर्मल स्कूलिंग द इफेक्टिवनेश ऑफ द रेविटेलाइजिंग एजुकेशन पार्टीसीपिटेशन एण्ड लर्निंग इन कॉनफ्लिक्ट एफेक्टेड एरियाज पीस एजुकेशन प्रोग्राम इन नॉर्थन युगाण्डा" विषय पर शोध कार्य किया। इनका उद्देश्य बालकों में प्रारम्भिक शिक्षा के अन्तर्गत शान्ति शिक्षा व नैतिक शिक्षा का विकास करना है। इस अध्ययन के निष्कर्ष में रोबिन्स ने पाया कि विद्यालयी क्षेत्र में आधारभूत शिक्षा के साथ–साथ शान्ति शिक्षा को भी महत्त्व दिया जाना चाहिए जिससे उन बालकों में नैतिक मूल्यों का विकास हो।

ऐरे (2011) ने "ए नेशनल पीस एजुकेशनल प्रोग्राम इन लेबनॉन एक्सप्लॉरिंग द पॉसिब्लिटीज फ्रॉम द लीडर्स पर्सपेक्टिदव्स" विषय पर शोध कार्य किया जिसका उद्देश्य लेबनॉन के विद्यार्थियों में शान्ति शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना था। यह अध्ययन ऐरे द्वारा लेबनॉन के विद्यार्थियों पर किया गया। इसमें पाया गया कि विद्यार्थियों में शान्ति शिक्षा के लिए उत्साह है तथा उनके लिए शान्ति शिक्षा हेतु कई प्रयत्न किए जा रहे हैं।

हेना युसुफ (2011)ने "द इन्टीग्रेशन ऑफ पीस एजुकेशन इन रीडिंग कॉम्प्रिहेन्शन लेशन्स इन प्राइमरी स्कूल" विषय पर शोध कार्य सम्पन्न किया जिसके निष्कर्ष में पाया कि विद्यालय में प्रारम्भ से ही शान्ति शिक्षा का लक्ष्य रखा जाना चाहिए।

लेजारस नेड (2011)ने "इवेल्युऐटिंग पीस एजुकेशन इन द ऑस्लो इन्टीटाडा जनरेशन ए लॉग टर्म इम्पेक्ट स्टडी ऑफ सीड्स ऑफ पीस" (1993–2010)", अध्ययन का उद्देश्य इजराइल और पेलेस्टॉइन लोगों के मध्य शान्ति के वातावरण का अध्ययन करना है। इस शोध से यह ज्ञात हुआ कि इन दोनों- देशों के मध्य शान्ति शिक्षा के कई कार्यक्रम चलाए जा रहे है ताकि इनमें बन्धुत्त्व की भावना का विकास हो।

पुरेन्दर,पी.जी. (1982) ''रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन का एक समालोचनात्मक अध्ययन'', इस शोध में भारत में रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन का समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है। टैगोर के अनुसार शिक्षा केवल सूचनाओं का आदान–प्रदान ही नहीं, बल्कि व्यक्तित्व एवं चरित्र का निर्माण करना हैं।

आधुनिक समय में शैक्षिक कार्यो मे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रुप से संलग्न समस्त व्यक्तियों के समक्ष विभिन्न प्रकार की समस्याएँ उपस्थित हैं। वर्तमान समय और प्रसंग के अनुरुप भारतीय शिक्षाशास्त्रियों के आदर्श, विचारों, नीतियों तथा सिद्धान्तों का महत्व पर्याप्त बढ़ गया है। अतः हमें शिक्षा मनीषियों के विचारों, नीतियों तथा सिद्धान्तों को जानना एवं उन पर मनन करना चाहिये। इसके हेतु रवीन्द्रनाथ टैगोर के दर्शन एवं विचारों का अध्ययन करना शोधार्थी को उपयुक्त लगा।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचारों में शान्ति शिक्षा के तत्व

स्वतंत्रता

टैगोर का मानना था कि प्रेम और कर्म के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। वे कहते हैं कि स्वतंत्रता की मौजूदगी में ही शिक्षा को अर्थ और औचित्य मिलता है। उन्होंने स्कूलों को शिक्षा की फैक्ट्री, बनावटी रंगहीन दुनिया से कटा हुआ और सफेद दीवालों के बीच से झांकती मृतक के आंखों की पुतली कहा था वे ऐसी शिक्षा को शांति के खिलाफ मानते हैं जो बालकों को उनकी रुचि के विपरीत दी जाती है।

शैक्षिक सहभागिता का विकास

बच्चों के संदर्भ में उन्होंने स्वतंत्र तथा मुक्त गतिविधि और उनके स्वास्थ व शारीरिक विकास के लिए खेलों को महत्व दिया है। उन्होंने पाया कि अगर बच्चे कुछ नहीं सीखते हैं तो भी उन्हें खेलने का पर्याप्त समय मिलना चाहिए। पेड़ों पर चढ़ना, तालाब में तैरना, फूल तोड़ना जैसी प्रकृति के साथ हजार शरारतें जारी रखने से उनके शरीर को पोषण, मन को खुशी और बचपन की नैसर्गिक प्रेरणाओं को संतुष्टि मिलेगी।

टैगोर मानते हैं कि हमारी शिक्षा स्वार्थ पर आधारित हो गई है तथा परीक्षा पास करने के संकीर्ण मकसद से प्रेरित यथाशीघ्र नौकरी पाने का जरिया बनकर रह गई है जो कठिन और विदेशी भाषा में साझा की जा रही है। इसके कारण हमें नियमों, परिभाषाओं, तथ्यों और विचारों के रूप में बचपन से रटने की

दिशा में धकेल दिया गया है। यह न तो हमें वक्त देती है और न ही प्रेरित करती है ताकि हम ठहरकर सोच सकें और सीखे हुये को आत्मसात कर सकें।

प्रकृतिवादी

टैगोर प्रकृतिवादी (Naturalist) थे किन्तु उनका प्रकृतिवाद रूसो के प्रकृतिवाद से भिन्न था। रूसों ने समाज को सभी बुराइयों की जड़ मानकर समाज और सामाजिक जीवन का घोर विरोध किया था किन्तु टैगोर के ह्रदय में समाज के प्रति प्रेम और दया का भाव था। वे समाज का उन्नयन करना चाहते थे और अतीत भारत की आत्मा को आधुनिक भारत की आत्मा में देखना चाहते थे। वे समाज को प्राकृतिक नियमों पर आधारित तो करना चाहते थे किन्तु आधुनिक वैज्ञानिकता एवं अतीत की धार्मिकता एवं नैतिकता से विहीन समाज को अच्छा नहीं समझते थे। वे मानते थे कि हमारी शिक्षा ने हमें प्रकृति और सामाजिक संदर्भ दोनों से दूर कर दिया है। यह निर्जीव और मूल्यहीन हो गई है। उन्होंने पाया कि शिक्षा बच्चों के लिए और ज्यादा अर्थपूर्ण बनाने के लिए पहला कदम बच्चे को प्रकृति के संपर्क में लाना होगा। यह शिक्षा को मात्रा और गुणवता में नैसर्गिक बनाकर हासिल किया जा सकता है। प्रकृति के साथ संपर्क से बच्चा विशाल दुनिया की वास्तविकता, निरन्तरता और खुशी से परिचित होगा।

जीवन की सहजता में विश्वास

टैगोर आत्म अनुशासन और अनावश्यक पदार्थों से मुक्त सहज तरीके से जीवन के आदर्श में विश्वास करते थे उनका मानना था कि इस विचार को मूर्त रुप देना चाहिये। उन्होंने स्कूलों के संदर्भ में अनावश्यक चीजों को कम करने का विचार रखा। उन्होंने पाया कि सहजता और स्वाभाविकता वास्तविक सभ्यता में शामिल होती है। इसलिए हमारे बच्चों को इसके लिए बहुत प्रारंम्भ से इसके लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिये। वे मानते थे कि वस्तुओं की विलासिता से मुक्त होकर बच्चा अपने हाथों और पैरों के वृहतर उपयोग करने के साथ साथ जमीन से परिचित हो सकेगा।

मानववादी विचार

टैगोर उच्च कोटि के मानवतावादी (Humanist) थे और मानव –व्यक्तित्व की गरिमा में उनका विश्वास था। टैगोर मानव जाति का उद्धार करना चाहते थे और मनुष्य के मूल्य को गिराने का घोर विरोध करते थे। उन्हें बड़ा दुःख था कि मानवीय मूल्यों का तिरस्कार हो रहा है और वर्तमान जीवन में मनुष्य का जीवन सस्ता होता जा रहा है। उनके अनुसार ये दुनिया मूल रूप से मानवीय दुनिया हैं। उन्हें इतना विश्वास था कि ईश्वर को भी वहीं पर खोजना चाहिए जहाँ पर किसान हल जोत रहा हो।

भौतिक दृष्टिकोण

भौतिक दृष्टि से गुरूदेव के अनुसार वास्तविक शिक्षा वह है जो उपयोगी वस्तुओं की वास्तविक प्रकृति को जानने और उनके उपयोग करने और उनसे वास्तविक जीवन की रक्षा करने में सहयोग करती हैं।

शान्ति शिक्षा का पाठ्यक्रम

विद्यालय के विभिन्न स्तरों के लिए शान्ति शिक्षा के पाठ्यक्रम को इस प्रकार निर्धारित किया है –

प्राथमिक स्तर

1. जीवन के नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित कहानियाँ, कविताएँ तथा नाटक।
2. विभिन्न धर्मों, क्षेत्रों तथा संस्कृतियों से सम्बन्धित कहानियाँ।

माध्यमिक स्तर

1. महात्मा गांधी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, विनोबा भावे, अब्राहम लिंकन, मार्टिन लूथर, किंग कार्लमार्क्स, नेल्सन मण्डेला, मदर टेरेसा, जीसस क्राइस्ट, गौतम बुद्ध की जीवनियाँ तथा शान्ति स्थापना में उनके कार्य।
2. ईसाई दर्शन, हिन्दू दर्शन, इस्लाम तथा बुद्ध दर्शन की विश्व शान्ति की स्थापना में भूमिका।

हाई स्कूल स्तर

1. शान्ति की अवधारणा।
2. शान्ति की आवश्यकता एवं महत्त्व।
3. परिवार समाज तथा विश्व में शान्ति कायम करने के साधन।
4. युद्ध एवं हिंसा के कारण एवं उनके परिणामों की समालोचना।
5. संयुक्त राष्ट्र संघ, यूनेस्कों, रेडक्रास, स्काउट एवं गाइड आन्दोंलन, अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियाँ, विश्व शान्ति में विभिन्न दर्शनों की भूमिका।

पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ/व्यावहारिक अनुभव

1. यू.एन.ओ. दिवस, पृथ्वी दिवस (Earth Day), शान्ति दिवस आदि का मनाना।
2. जूनियर रेडक्रॉस तथा स्काउटिंग एवं गाइडिंग की क्रियाओं में भाग लेना।
3. समाजिकी वानिकी, श्रमदान आदि में भाग लेना।
4. पेन–मित्रता कायम करना, साथ ही बच्चों द्वारा फोटो, चित्र, कलेण्डर, स्टाम्प, सिक्के आदि का आदान–प्रदान।
5. शैक्षिक फिल्मों का प्रदर्शन जिससे छात्रों के मानसिक अन्तरिक्ष को उन्नत बनाया जा सके।
6. महान विभूतियों के जन्म दिवस मनाना।
7. अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व के मामलों पर सिम्पोजियम, वाद–विवाद प्रतियोगिता, संसद आदि का आयोजन करना।
8. विभिन्न विषयों पर देश तथा विदेश के विजिटिंग प्रोफेसरों के भाषणों का आयोजन करना।
9. शान्ति के दूतों की एलबम तैयार करना।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति के अनुसार शिक्षा का अर्थ मुक्ति प्रदान करना है।'सा विद्या या विमुक्तये'। शिक्षा व्यक्ति की वृद्धि की परिष्कृत, परिमार्जित करती है, अज्ञानान्धकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाती है। शिक्षा ही उसे सत व असत् में विवेक करना सिखाती है।

आज वैश्वीकरण के युग में जहां प्रतियोगिता की अंधी दौड़ लगी हुई है वहीं शिक्षा की अति आवश्यकता हैं जो एक अच्छे मानव, अच्छे नागरिक ओर एक समाज का निर्माण करे, जहां नागरिक अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की ओर प्रेरित हों और शान्ति शिक्षा के महत्व को समझ सकें।

अतः शांति शिक्षा एक सकारात्मक दृष्टिकोण है जिसका अर्थ ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है जो अंहिसा, सामाजिक न्याय, भातृत्व व समानता आदि सकारात्मक गुणों को अपने जीवन का अगं बनाएं और हिंसा, शोषण, सामाजिक अन्याय, द्वैष, परस्पर वैमनस्य ओर असहयोग आदि नकारात्मक प्रवृतियों से दूर रहे। इस रूप में शांति–शिक्षा एक प्रक्रिया है जो प्रांरभ से ही बालकों में शैक्षिक पर्यावरण के माध्यम से सृजनात्मक दृष्टिकोण का विकास करती है।

शोध सूची

1. अग्रवाल, एस. के. (1981) शिक्षा के तात्विक सिद्धान्त, मेरठः राजेश पब्लिशिंग हाउस।
2. ओड, लक्ष्मीनारायण,(1990) शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि,"

जयपुरः हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3. बनर्जी, हिरण्यमय, (1992) आधुनिक भारत के निर्माताः रवीन्द्रनाथ ठाकुर नई दिल्लीः सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।
4. चतुर्वेदी, सीताराम (1970) शिक्षा दर्शन उत्तरप्रदेश, लखनऊः हिन्दी समिति सूचना विभाग।
5. देवराज, नन्दकिषोर (1990) "भारतीय दर्शन," लखनऊः हिन्दी समिति सूचना विभाग।
6. गुप्त, बजरंगलाल (2003) हिन्दू अर्थ चिन्तन, नागपुरः भारतीय विचार साधना।
7. गुप्त, नत्थुलाल (2005) प्राचीन भारतीय शिक्षा और शिक्षाशास्त्री" मेरठः राधा पब्लिकेशन्स।
8. कृष्ण, कुमार (1999) प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति, वाराणसीः मयंक प्रकाशन, हरिद्वार।
9. कुमार, अमित (2006) शिक्षा दर्शन नई दिल्लीः संजय प्रकाशन।
10. Kriplani, Krishna, (1980) Rabindranath Tagore, Calcutta : Vishva bharati.
11. लाल, बसन्त कुमार (1995) समकालीन भारतीय समाज, नई दिल्लीः मोतीलाल ,बनारसी दास।
12. लाल, रमन बिहारी (2004) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त" मेरठः रस्तोगी पब्लिकेशन्स।
13. लाल, रमन बिहारी (2004)विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिन्तक," मेरठः आर. लाल बुक डिपो,
14. मिश्र, बाबूलाल,(2003) महाभारत कालीन शिक्षा प्रणाली" दिल्लीः प्रतिभा प्रकाशन,
15. मित्तल, एम. एल.(1993) शिक्षा सिद्धान्त, मेरठः लॉयल बुक डिपो,
16. O'connell, Kathleen, (2002) Rabindranath Tagore: The Poet as Educator, Calcutta: Vishva bharati
17. पाण्डेय, रामशक्ल (1990) शिक्षा दर्शन, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
18. पारीक मथुरेश्वर (2005) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा," जयपुरः शिक्षा प्रकाशन।
19. रावत, प्यारेलाल (1956)"भारतीय शिक्षा का इतिहास", आगराः भारत पब्लिकेशन।
20. जांगिड, रामविलास (2011) "शांति के लिए शिक्षा", शिविरा पत्रिका, माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर राजस्थान, सितंबर।